INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: IX	Department: Hindi	Date of submission: NA
Question Bank	Topic: खुशबू रचते हैं हाथ	Note: Pl. file in portfolio

खुशबू रचते हैं हाथ कवि : श्री अरुण कमल

प्रश्न - निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

क. 'खुशबू रचनेवाले हाथ' कैसी परिस्थितियों में तथा कहाँ-कहाँ रहते हैं ?

उत्तर: खुशबू रचने वाले अर्थात् खुशबूदार अगरबत्तियाँ बनाने वाले लोग कठिन परिस्थितियों में, मलिन बस्तियों में कूड़े के ढेर से भरी गलियों में तथा गंदे नालों के आस-पास रहते हैं। उनका जीवन बदबूदार तथा प्रदूषित वातावरण में बीतता है। उनके जीवन में किसी भी प्रकार की स्वच्छता और सुगंध नहीं।

ख. कविता में कितने प्रकार के हाथों की चर्चा हुई है ?

उत्तर: कविता में निम्नलिखित प्रकार के हाथों की चर्चा की गई है:

1. उभरी नसों वाले अर्थात् वृद्धों के हाथ।
2. घिसे नाखूनों वाले अर्थात् श्रमिक वर्ग के हाथ।
3. पीपल के पत्ते जैसे नए-नए हाथ अर्थात् छोटे बच्चों के कोमल हाथ।
4. जूही की डाल जैसे खुशबूदार हाथ अर्थात् नवयुवतियों के सुंदर हाथ।
5. गंदे कटे-पिटे हाथ।
6. ज़ख्म से फटे हुए हाथ।

ग. कवि ने यह क्यों कहा है कि 'खुशबू रचते हैं हाथ' ?

उत्तर: कवि ने गरीब-परिश्रमी मज़दूरों के श्रम को महत्त्व देते हुए कहा है कि बदबूदार, बदहाल, अस्वच्छ वातावरण में रहने वाले ये लोग खुशबू के रचनाकार हैं। इनका जीवन प्रदूषण और अभावों से भरा है फिर भी इनके हाथ हमारे जीवन में सुगंध फैलाने वाली वस्तुओं की रचना करते हैं इसलिए ये खुशबू के रचनाकार हैं।

घ. जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है ?

उत्तर: जहाँ खुशबूदार अगरबत्तियों का निर्माण होता है वहाँ चारों ओर गंदगी के ढेर लगे होते हैं। नालियों और कूड़े-कर्कट में भयानक बदबू सराबोर होती है। खुशबूदार अगरबत्तियों के रचनाकार श्रमिक ऐसे अस्वच्छ वातावरण में रहकर, कई मजबूरियों के बीच भी जीवन को सुगंधित करने वाली अगरबत्तियों की रचना करते हैं।

ङ. इस कविता को लिखने का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

उत्तर: कवि ने भारतीय समाज की सामाजिक और आर्थिक विषमताओं को स्पष्ट करने के लिए इस कविता की रचना की है। कवि का उद्देश्य स्पष्ट है - वह हमारे जीवन में सौन्दर्य, सुख-सुविधाएँ भरने वाले दरिद्र और पिछड़े लोगों की तरफ़ समाज का ध्यान खींचना चाहता है। जिसे जानकर गरीब मजदूरों के जीवन की कठिनाइयाँ और उनके प्रति हो रहे भेदभावों को दूर किया जा सके। कवि इस तरफ़ भी हमारी संवेदना को सक्रिय करता है कि समाज के समर्थ लोग मिलकर इन परिश्रमी लोगों के जीवन में स्वच्छता, सुगंध और सौन्दर्य भरें। उनकी यथा संभव सहायता करें।